इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम और नल

चेतो न लङ्घम् अयते मदीयम् ।3.67

आशय:→ चेतो नलं कामयते मदीयम् । एक सभङ्ग श्लेष
दमयन्त्याः विवाहप्रसङ्गे सरस्वती द्वारा नल व चार देवता
का परिचय कराते हुए पाँच अर्थ देने वाले पाँच
पद्यों की रचना श्री हर्ष ने की है जो पंचनली
के नाम से प्रसिद्ध है । यथा —

देवः पतिर्विदुषि ! नैषधराज गत्या, निर्णीयते न किमु न व्रियते भवत्या।
नायं नलः खलु तवातिमहानलाभो यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनः

व्याकरण → व्याकरण में उनका ज्ञान इतना प्रखर है, कि वह व्याकरण को भी व्यङ्ग्य का विषय बना लेते हैं यथा →

"उभयी प्रकृतिः कामे सज्जेदिति मुनेर्मनः।
अपवर्गे तृतीयेति भणतः पाणिनेरपि ॥" 16/70

हंस राजा नल का वर्णन करते हुए कहता है —

"क्रियेत चेत्साधुविभक्तिचिन्ता, व्यक्तिस्तदा सा प्रथमाभिधेया।
या स्वौजसां साधयितुं विलासैः तावत्क्षमा नामपदं बहु स्यात्॥

न्यायदर्शन → श्री हर्ष ने न्याय-दर्शन में वर्णित 'आनन्द-रहित मोक्ष' के विषय में गौतम को 'गो तम' कहकर उनपर व्यङ्ग्य किया है →

"मुक्तये यः शिलात्वाय शास्त्रमूचे सचेतसाम् ।
गौतमं तमवेक्ष्यैव यथा वित्थ तथैव सः॥"

वैशेषिक → वैशेषिक दर्शन में (तम) अन्धकार को भी पदार्थ मानने का वर्णन है अतः इस दर्शन के प्रणेता कणाद को उन्होंने 'उलूक' कहा है। क्योंकि उनका दूसरा नाम भी उलूक है जिसके कारण वैशेषिक 'औलूक्य' दर्शन कहलाता है।

ध्वान्तस्य वामोरु विचारणायां वैशेषिकं चारु मतं मतं मे। औलूकमाहुः खलु दर्शनं तत् क्षमं तमस्तत्त्वनिरूपणाय। नस्ते॥ 22/35

वेदान्त → वेदान्त के सिद्धान्तानुसार मुक्तावस्था में परमात्मा और जीवात्मा एक हो जाते हैं, इस पर व्यङ्ग्य करते हुए कवि कहता है कि मूर्खों को अपनी समाप्ति ही रुचिकर होती है।

"स्वयं च ब्रह्म च संसारे, मुक्तौ तु ब्रह्म केवलम्। इति स्वोच्छित्तिमुक्त्युक्तिवैदग्धी वेदवादिनाम्॥"

अन्यान्य दर्शन

श्री हर्ष ने सभी दार्शनिक मतों का खण्डन करते हुए अद्वैत को ही सर्वमान्य कहा है। सरस्वती के स्वरूप का वर्णन करते हुए बौद्ध दर्शन की तीन शाखाओं (शून्यवाद, विज्ञानवाद व सौत्रान्तिकों का साकार विज्ञानवाद) का वर्णन किया है। १०/८८

वैशेषिक दर्शन सम्बन्धी परमाणुवाद का 'मनोभिरासीदणुप्रमाणैः' में मन की अणुस्वरूपता का वर्णन है।

"नास्ति जन्यजनकव्यतिभेदः" 2/28 में सांख्यदर्शन संबंधी सत्कार्यवाद का और 'संप्रज्ञातवासिततमः समपादि' में योगदर्शन संबंधी संप्रज्ञातसमाधि का वर्णन है।

ज्योतिष— "अजस्रमभ्यासमुपेयुषा समं मुदैव देवः कविना बुधेन च।" 2/26

इसमें अपने ज्योतिषशास्त्रीय ज्ञान से विद्वानों को परिचित कराया है। अतः इतने शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों के वर्णन से व इनमें भी श्लेषों के प्रभाव से काव्य बहुत कठिन हो गया है जिसमें पाठक अर्थ लगाने में ही दिमागी कसरत करने लगते हैं और रस से दूर चले जाते हैं। अतः विद्वानों ने इस ग्रन्थ की परीक्षा करके कहा है कि इसमें कलापक्ष का इतना महत्व है, कि भावपक्ष बहुत गौण हो गया है इसलिए ही इस महाकाव्य को विद्वानों ने कटुकौषध की संज्ञा दी है—

'नैषधं विद्वदौषधम्'